L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - III
PAPER - VII
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC - Fate of Structuralism.

DR. PRAMOD KUMAR SAHU,
Assistant Professor,
Guest - Teacher,
U.S.R. College, Rahika,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018@gmail.com

संरचनावाद का भविष्य :- Fate of Structuralism.

मनोविज्ञान में संरचनावाद की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कि यह मनोवैज्ञानिकों का पहला ऐसा स्कूल था जो आधुनिक मनोविज्ञान को प्रयोगात्मक बनाया, मनोविज्ञान का एक विशेष लक्ष्य (goal) निर्धारित किया तथा इसकी वैज्ञानिक विधियों का प्रतिपादन किया, फिर भी एक सम्प्रदाय के रूप में आधुनिक समय में संरचनावाद का अस्तित्व समाप्त हो चुका है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के लिए संरचनावाद लिपजिग विश्वविद्यालय तथा कार्नेल विश्वविद्यालय की मनोवैज्ञानिक घटनाओं का मात्र एक याद-सा रह गया है। संरचनावाद की स्वाभाविक मृत्यु का कारण यह था कि इसके उद्देश्य सीमित थे, जो पूरा हो गए। इसमें मनोविज्ञान के व्यावहारिक पहलू की उपेक्षा की गई तथा इसके पास वस्तुनिष्ठ आँकड़ों की कमी थी, बोरिंग (Boring) ने अपनी मशहूर पुस्तक (The physical dimension of consciousness) में संरचनावाद के अस्तित्व को सुरक्षा प्रदान करते हुए यह कहा है कि चेतन अनुभूति ही मनोविज्ञान की वैध अध्ययन है। इस अवस्था में बोरिंग संरचनावाद की वैज्ञानिक जटिलताओं से चेतन अनुभूति एवं दैहिक प्रक्रियाओं के बीच के सहसम्बन्ध के आधार पर वस्तुनिष्ठता साबित करने का प्रयास किये हैं। लेकिन व्यवहारवाद अर्थात 1913 में वे खुलकर यह विचार व्यक्त किये कि चेतना एवं निजी अनुभूति का अवलोकन मनोविज्ञान के लिए काम का नहीं था, अतः इसे वैज्ञानिक मनोविज्ञान के कक्षाओं से बाहर निकाल देना चाहिए। इससे मरना जा

संरचनावाद को तीव्र धक्का पहुँचा और उसकी मृत्यु तात्कालिक हो गयी, बोरिंग यदि इस तरह की घोषणा की राय थी, कि लोग वास्तविकता तथा जीवनकाल को देखें के महत्व को समझें और उसे - इस मनोविज्ञान के विषय - वस्तु बनाने पर जोर डालें।

वुण्ट और टिचनर में समानता के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं

(i) वुण्ट के समान टिचनर ने भी यह मत व्यक्त किया कि मनोविज्ञान चेतन अनुभूति के अध्ययन का विज्ञान है। अतः दोनों मनोवैज्ञानिकों के लिए मनोविज्ञान की विषय - वस्तु चेतन अनुभूति थी,

(ii) दोनों मनोवैज्ञानिक यदि अन्तर्निरीक्षण प्रेक्षण तथा प्रयोग को मनोविज्ञान की प्रमुख विधि माना गया, वुण्ट के समान टिचनर ने भी यह मत व्यक्त किया कि अन्तर्निरीक्षण भी आत्म प्रेक्षण प्रयोग का एक अंग है। दोनों ही मनोवैज्ञानिक द्वारा प्रशिक्षित अन्तर्निरीक्षकों की आवश्यकता बताया गया,

(iii) वुण्ट के समान टिचनर भी मनोदैहिक समानान्तरवाद में विश्वास रखते थे, यद्यपि मन - शरीर समस्या के बारे में इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के विचार लगभग एक समान थे, दूसरे शब्दों में इन दोनों मनोवैज्ञानिकों का मत था, कि मानसिक घटनाओं तथा शारीरिक घटनाओं में स्पष्ट अन्तर होता है। दोनों में से कोई किसी को भी उत्पन्न नहीं करता है। और दोनों के बीच में किसी प्रकार की अन्तः क्रिया नहीं होती है। दोनों एक दूसरे के समानान्तर चलते हैं। और एक में परिवर्तन होने पर दूसरे में भी अपने आप परिवर्तन हो जाता है।

(iv) दोनों ने मनोविज्ञान के स्वरूप को प्रयोगात्मक (Experimental) बनाने की दिशा में सराहनीय प्रयास किये, इन समानताओं के बावजूद वुण्ट तथा टिचनर में कुछ स्पष्ट विभेद या असमानता है। जिसे निम्नांकित पाँच बिन्दुओं के तहत उल्लेख किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(i) वुण्ट के विचार से एक चेतन अनुभूति के दो तत्व होते हैं। संवेदन तथा भाव। टिचनर के मत से एक चेतन अनुभूति के तीन तत्व होते हैं। संवेदन भाव एवं प्रतिमा। वुण्ट ने प्रतिमा को चेतन अनुभूति का एक स्वतंत्र तत्व नहीं माना था, बल्कि उसे संवेदनों के मिश्रण से उत्पन्न होने वाला एक तत्व माना था।

(ii) वुण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के दो प्रमुख विशेषताएँ होती हैं। गुण तथा तीव्रता। टिचनर ने इन दो के क्रम में दो और जोड़ा है वे दो हैं। अवधि तथा स्पष्टता एवं अन्त में टिचनर ने एक और विशेषता अर्थात विस्तार को माना है। लेकिन टिचनर ने यह भी स्पष्ट किया कि विस्तार की यह विशेषता सिर्फ दृष्टि एवं स्पर्श के संवेदों में होती है। टिचनर ने यह बतलाया कि स्पष्टता की विशेषता भाव में नहीं पायी जाती है।

(iii) टिचनर वुण्ट द्वारा प्रतिपादित भाव के त्रिविमीय सिद्धान्त को अस्वीकृत कर दिया था, वुण्ट द्वारा भाव के तीन आयामों अर्थात सुखद, दुःखद तनाव-शिथिलता उत्तेजना-शांति में से टिचनर ने अन्तिम दो आयामों को अस्वीकृत कर दिया, क्योंकि ये दोनों स्वतंत्र रूप से अनुभूतियों के भाव नहीं होते हैं बल्कि मात्र गति अनुभूति के भाव हैं।

(iv) टिचनर मनोविज्ञान के प्रयुक्त पहलुओं का आलोचना किये हैं। उनका मत है कि मनोविज्ञान एक मौलिक एवं सामान्य विज्ञान है। जिसका कोई व्यावहारिक उद्देश्य नहीं है। स्पष्टतः मनोविज्ञान एक मौलिक एवं सामान्य विज्ञान है। जिसका कोई व्यावहारिक उद्देश्य नहीं है। स्पष्टतः मनोविज्ञान की प्रयुक्त शाखाएँ जैसे - बाल मनोविज्ञान, पशु मनोविज्ञान तथा असामान्य मनोविज्ञान तो उस समय उभर रही हैं पर टिचनर ने ध्यान यह कहते हुए नहीं दिया, कि इन सबों से कोई मनोवैज्ञानिक [illegible] नहीं मिल पाता है। इसी तरह

(iv)

फ्रायड ने ऐसी नई क्रिया और नए ज्ञान पर प्रकाशित कर दिया कि बच्चों एवं असामान्य के व्यवहारों में एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं मिलती है।

(v) फ्रायड एक जन्मजात विद्वान थे। एक मत व्यवहारों के उन्होंने आप में एक संस्था मानते हैं। जिन्होंने मनोविज्ञान के क्षेत्र में न सिर्फ नया बदलाव परन्तु बहुत सारे मनोवैज्ञानिक को एक प्रभावित किया, चिन्तन की सहायकों ने इतना महत्व नहीं दिया है। कहा है कि उनके योगदान एवं प्रभावों को केवल कुछ कहा जा सकता है कि वे वास्तव: एक वैज्ञानिक मनोवैज्ञानिक है। जिन्होंने नया खोज किया, परन्तु सीमित दायरे में।

स्पष्ट है कि कुछ कमजोरियों के बावजूद चिन्तन एवं फ्रायड में असमानताएं है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 14/08/2020
Sub - Psychology

Scanned with CamScanner